भजन

जो इश्क के सागर में डूबे,
अपनी मंजिल तक आ पहोंचे...
बेखुदी की राहों पर चलकर,
अपनी मंजिल तक आ पहोंचे ...

1–जो बसते है मयखानों में,
और इश्क सुराही में डूबे...
पीकर साकी के हाथों से,
अपनी मंजिल तक आ पहोंचे ...
2–जो आशिक है बिना ख्वाहिस के,
प्रीतम की इबादत करते है...
जो प्रीतम है बिना याद किए,
आशिक के दिल तक आ पहोंचे ...
3–दुःख दर्द की लहरों पर आशिक,
बेखोफ गुजारा करते है...
वो इश्क नही जो मोजौ से,
डरकर मंजिल तक ना पहोंचे...